

बहन के रूप में संबोधित किया जाता है 3. समवयस्क महिला को भी बहिन कहा जाता है।

बहियाँ स्त्री. (तत्.) 1. बाँहें, कोमल हाथ 2. किशोर-युवावस्था वाले बालक-बालिकाओं के हाथ।

बहिरंग वि. (तत्.) 1. जो बाहर का हो बाहरी 2. फालतू, अनावश्यक पुं. 1. बाहरी या ऊपरी भाग या अंग जैसे- बहिरंग वस्त्र विलो. अंतरंग 2. पूजन आदि के प्रारंभ में किए जाने वाला कृत्य।

बहिरंतर पुं. (तत्.) 1. बाहर और अंदर 2. बाहर और अंदर का एक रूप उदा. प्रियदर्शन की आशा में उसका बहिरंतर खेल गया।

बहिर्गत वि. (तत्.) 1. जो बाहर गया हुआ हो, निकला हुआ 2. बाहरी 3. अलग विलो. अंतर्गत।

बहिर्गमन पुं. (तत्.) 1. किसी स्थान से बाहर जाना, निकलना 2. निर्वाचित सदस्यों का (लोकसभा विधानसभा आदि में) किसी कथित अव्यवस्था के विरुद्ध बाहर निकल जाना।

बहिर्जन पुं. (तत्.) बाहरी जन, बाहर के लोग।

बहिर्जात वि. (तत्.) जीव वि. 1. जो बाहर पैदा हुआ हो जैसे- नाखून 2. किसी पेड़-पौधे से बाह्य रूप से निकली हुई शाखाएँ 3. वन-वृक्षों की वृद्धि के फलस्वरूप तनों पर प्रतिवर्ष चढ़ने वाली नई परत 4. वे वृक्ष जिनके तने इस प्रकार के हों।

बहिर्जीवन पुं. (तत्.) 1. बाहरी जिंदगी 2. वास्तविकता से दूर दिखाने का जीवन।

बहिर्द्वार पुं. (तत्.) बाहरी दरवाजा, बाहर निकलने का मार्ग।

बहिर्भाग पुं. (तत्.) किसी वस्तु, प्राणी वनस्पति आदि का बाहरी हिस्सा।

बहिर्भूत वि. (तत्.) बाहर हुआ, बाहर किया गया।

बहिर्भूमि स्त्री. (तत्.) वह भूमि जो घर, ग्राम, नगर आदि की सीमा से बाहर हो जैसे- पशुओं के लिए चरागाह आदि की भूमि।

बहिर्मुख वि. (तत्.) 1. जिसका मुख बाहर की ओर हो 2. जिसका मन संसार के विषयों में ही लगा

हो 3. मनोवि. जिसका ध्यान आंतरिक जगत से हटकर बाह्य जगत की ओर प्रवृत्त हो विलो. अंतर्मुख।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व पुं. (तत्.) 1. जिसके व्यक्तित्व में सांसारिक विषयों या बाह्य जीवनशैली के प्रति आकर्षण हो 2. जिसकी जीवनशैली में बाहरी दिखावा अधिक हो विलो. अंतर्मुखी व्यक्तित्व।

बहिर्योग पुं. (तत्.) 1. योग दर्श. बाह्य विषयों पर मन की एकाग्रता होना 2. सांसारिक विषयों का ध्यान व चिंतन विलो. अंतर्योग।

बहिर्लापिका स्त्री. (तत्.) एक प्रकार की वह पहेली जिसका उत्तर पहेली के शब्दों के अंतर्गत न होकर बाहर से प्राप्त होता है विलो. अंतर्लापिका।

बहिर्विवाह पुं. (तत्.) किसी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध अन्य वर्जित जाति, वर्ग में किया जाने वाला विवाह 2. अपने गोत्र, जाति, धर्म क्षेत्र से भिन्न व्यक्ति के साथ किया जाने वाला विवाह विलो. 'अंतर्विवाह'।

बहिर्वृत्त पुं. (तत्.) गणि. वह 'वृत्त' जो त्रिभुज की किसी एक भुजा को स्पर्श करता हुआ तथा शेष दो भुजाओं के बढ़ाए हुए भागों को स्पर्श करता है।

बहिवर्तन पुं. (तत्.) 1. किसी चीज या उपकरण आदि का बाहर की ओर घूमना या घूमा हुआ होना 2. चिकि. किसी अंग को बाहर की ओर मोड़ना पलटना।

बहिश्त पुं. (फा.) बहिश्ती वि. जो स्वर्ग से संबंधित हो पुं. 1. स्वर्ग में रहने वाला 2. देवदूत या देवता।

बहिश्शाल पुं. (तत्.) शिक्षा का वह स्थान जो विद्यालय या शाला से बार हो वि. (तत्.) शाला से बाहर।

बहिश्शाल शिक्षा स्त्री. (तत्.) शाला, विद्यालय से बाहर किसी स्थान पर दी जाने वाली शिक्षा जैसे- पुस्तकालय आदि की शिक्षा।